सूरह — एक कहानी

सूरह अल-फ़ज्र

सुबह

पूरा सफ़र — आसानी का इम्तिहान, मुश्किल का इम्तिहान —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 89 • 30 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वल्-फ़ज्र। व लयालिन 'अश्र
1-2. क़सम है सुबह की, और दस रातों की।

इन्न रब्बक ल-बिल्-मिर्सादि
14. बेशक आपका रब घात में हैं।

फ़-यक़ूलु रब्बी अक्रमन
15. तो वो कहता है: मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी।

फ़-यक़ूलु रब्बी अहानन
16. तो वो कहता है: मेरे रब ने मुझे ज़लील किया।

या लैतनी क़द्दम्तु लि-हयाती
24. काश मैंने अपनी ज़िंदगी के लिए कुछ आगे भेजा होता।

या अय्यतुहन्-नफ़्सुल्-मुत्मइन्नह
27. ऐ इत्मिनान वाले नफ़्स!

पौ फटने पर पाँच क़समें

बेटा, यह सूरह ऐसी क़समों से शुरू होती है जिन्हें सुन कर लगता है कि आप तुलू-ए-आफ़ताब से पहले के आख़िरी अँधेरे में बाहर खड़े हैं: 'वल्-फ़ज्र — क़सम है सुबह की — व लयालिन 'अश्र — और दस रातों की — वश्-शफ़्'इ वल्-वत्र — और जोड़ और ताक़ की — वल्-लैलि इज़ा यस्र — और रात की जब वो गुज़र रही हो।'

'दस रातें', बेटा, उलमा के नज़दीक ज़्यादातर ज़िल-हिज्जा के पहले दस दिन हैं — साल के बेहतरीन दिन, जिनके बारे में नबी ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह को इन दिनों के नेक अमल से ज़्यादा कोई अमल महबूब नहीं। कुछ ने रमज़ान के आख़िरी दस को भी शामिल किया। और 'जोड़ और ताक़' की कई तशरीहात हैं — उनमें नमाज़ें, हज के दिन, और यह कि सारी मख़लूक़ जोड़ों में है जबकि ख़ालिक़ अकेला वित्र, एक है।

और 'रात जब वो गुज़र रही हो' — बेटा, ग़ौर कीजिए कि अल्लाह ने रात के आने की

क़सम नहीं खाई, बल्कि उसके गुज़रने की, जब वो जा रही हो। क्योंकि रात का असल सबक़ यही है: वो गुज़र जाती है। हर अँधेरा गुज़र जाता है।

और फिर एक सवाल जो ख़ुद एक तारीफ़ भी है और एक चैलेंज भी: 'हल फ़ी ज़ालिक क़समुल्-लि-ज़ी हिज्र — क्या इसमें 'हिज्र' वाले के लिए क़सम है?' 'हिज्र', बेटा, का मतलब है रोक, ज़ब्त — और अक़्ल को 'हिज्र' इसलिए कहा जाता है कि असल अक़्लमंदी इंसान को बेवक़ूफ़ी से रोक देती है। तो आयत पूछ रही है: क्या यह उस शख़्स के लिए काफ़ी है जिसमें ख़ुद को रोके रखने का शुऊर है? क़ुरआन की तारीफ़ में असल ज़हानत चालाकी नहीं — ज़ब्त है।

तीन तहज़ीबें, एक अंजाम

फिर अल्लाह अपने रसूल ﷺ से — और हमसे — कहते हैं कि तारीख़ पर नज़र डालें: 'अलम तर कैफ़ फ़-'अल रब्बुक बि-'आद — क्या आपने नहीं देखा कि आपके रब ने 'आद के साथ क्या किया — इरम ज़ातिल्-'इमाद — इरम, जिनके बुलंद सुतून थे — अल्लती लम युख़्लक़ मिस्लुहा फ़िल्-बिलाद — जिनकी मिसाल शहरों में कभी पैदा नहीं की गई थी?'

बेटा, यह बयान पढ़िए: एक ऐसी तहज़ीब जिसकी ता'मीर इतनी शानदार थी कि उसके जैसा कुछ कभी बना ही नहीं था। उनकी इंजीनियरिंग ला-जवाब थी; उनके सुतून मशहूर थे। और आज वो कहाँ हैं?

'व समूदल्-लज़ीन जाबुस्-सख़्र बिल्-वाद — और समूद, जिन्होंने वादी में पत्थर तराशे।' बेटा, उन्होंने पत्थरों से ता'मीर नहीं की — उन्होंने पहाड़ों के अंदर तराश कर घर बनाए, चट्टानों के चेहरे काट कर। उनका हुनर आज भी शुमाली अरब में खड़े खंडरात में नज़र आता है, ख़ाली पड़े हुए।

'व फ़िर'औन ज़िल्-औताद — और फ़िरऔन, मेखों वाला' — एहराम जैसे तंबू की मेखें, या वो मेखें जिन पर वो लोगों को अज़ाब देता था; दोनों मानी ज़िक्र किए गए हैं।

'अल्लज़ीन तग़ौ फ़िल्-बिलाद — जिन्होंने शहरों में सरकशी की — फ़-अक्सरू

फ़ीहल्-फ़साद — और उसमें फ़साद बढ़ाया — फ़-सब्ब 'अलैहिम रब्बुक सौत 'अज़ाब — तो आपके रब ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया।'

बेटा, क़दीम दुनिया की तीन सबसे तरक़्क़ी-याफ़्ता तहज़ीबें — ता'मीर में, इंजीनियरिंग में, ताक़त में — और हर एक का नाम यहाँ उसके सबसे बड़े कारनामे के साथ लिया गया, और फिर उसका अंजाम। अल्लाह तारीख़ का एक क़ानून सिखा रहे हैं: तकनीकी अज़मत उस क़ौम को नहीं बचाती जिसका अख़लाक़ गिर जाए। सुतून, तराशे हुए पहाड़ और एहराम आज भी खड़े हैं; उन्हें बनाने वाले जा चुके।

'इन्न रब्बक ल-बिल्-मिर्साद — बेशक आपका रब घात में हैं' — 'मिर्साद' रास्ते पर बनी वो चौकी है जहाँ से गुज़रने वाली हर चीज़ नज़र आती है। बेटा, कोई अल्लाह के सामने से बग़ैर देखे नहीं गुज़रता।

वो दो इम्तिहानात जिन्हें सब ग़लत पढ़ते हैं

और अब, बेटा, इस सूरह का नफ़सियाती दिल — दो आयतें जो बयान करती हैं कि तक़रीबन हर इंसान अपनी ही ज़िंदगी को किस तरह ग़लत समझता है:

'फ़-अम्मल्-इंसानु इज़ा मब्तलाहु रब्बुहू फ़-अक्रमहू व न'अ'महू — इंसान का हाल यह है कि जब उसका रब उसे इज़्ज़त और आराम दे कर आज़माता है — फ़-यक़ूलु रब्बी अक्रमन — तो वो कहता है: मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी।'

'व अम्मा इज़ा मब्तलाहु फ़-क़दर 'अलैहि रिज़्क़ह — और जब वो उसे रिज़्क़ तंग कर के आज़माता है — फ़-यक़ूलु रब्बी अहानन — तो वो कहता है: मेरे रब ने मुझे ज़लील किया।'

बेटा, वो लफ़्ज़ पकड़िए जो अल्लाह ने दोनों हालतों के लिए इस्तेमाल किया: 'इब्तला' — उसने उसे आज़माया। दौलत एक इम्तिहान है। ग़ुरबत एक इम्तिहान है। तरक़्क़ी इम्तिहान है, और रद्द होना भी। सेहत, बीमारी; औलाद, बे-औलादी; शोहरत, गुमनामी — ये सब इम्तिहानी पर्चे हैं, बस सवाल अलग अलग हैं।

मगर देखिए इंसान क्या कहता है। जब उसे मिलता है तो वो नतीजा निकालता है:

अल्लाह मुझसे मोहब्बत करते हैं, मुझे इज़्ज़त मिली, मैं ज़रूर कुछ ठीक कर रहा हूँ। और जब रोक लिया जाता है तो वो नतीजा निकालता है: अल्लाह ने मुझे ज़लील कर दिया, उन्हें मेरी परवाह नहीं, मैं ही क्यों।

और अल्लाह 'कल्ला' से जवाब देते हैं — हरगिज़ नहीं! दोनों पढ़ने ग़लत हैं। बेटा, दौलत ख़ुद-ब-ख़ुद अल्लाह की ख़ुशनूदी की निशानी नहीं — वो दुनिया उनको भी देते हैं जिनसे मोहब्बत करते हैं और उन्हें भी जिनसे नहीं। और ग़ुरबत उनके ग़ुस्से का निशान नहीं — अंबिया, सारी मख़लूक़ में सबसे महबूब, अक्सर सबसे कम रखते थे।

तो फिर मोमिन अपनी ज़िंदगी कैसे पढ़े? अपने बैंक बैलेंस के साइज़ से नहीं, बेटा, बल्कि अपने रवैये से — उस पर्चे में जो उसके हाथ में दिया गया है।

असल पैमाना: आप कमज़ोर के साथ कैसे पेश आते हैं

'कल्ला बल ला तुक्रिमूनल्-यतीम — हरगिज़ नहीं! बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते।'

बेटा, लफ़्ज़ देखिए: 'तुम यतीम को खिलाते नहीं' नहीं — 'तुम उसकी इज़्ज़त नहीं करते'। क्योंकि यतीम को खिलाया भी जा सकता है और फिर भी उसे कुचला जा सकता है: बचा हुआ खाना एक ठंडी साँस के साथ, बार बार यह एहसास कि वो बोझ है, घर के दूसरे बच्चों से अलग लहजा। अल्लाह करामह माँग रहे हैं — इज़्ज़त — सिर्फ़ खाना नहीं।

'व ला तहाद्दूना 'अला त'आमिल्-मिस्कीन — और तुम एक दूसरे को मिस्कीन को खिलाने पर नहीं उभरते।' फिर वही, बेटा — सिर्फ़ 'तुम खिलाते नहीं' नहीं, बल्कि तुम एक दूसरे को इस पर उकसाते नहीं। एक पूरे मुआशरे को उसकी भूक पर ख़ामोशी का ज़िम्मेदार ठहराया जा रहा है।

'व त'कुलूनत्-तुरास अक्लल्-लम्मा — और तुम विरासत को लालचा कर खा जाते हो' — 'लम्मा' का मतलब है सब को समेट लेना बग़ैर यह देखे कि क्या क्या हक़ नहीं है: बेवा का हिस्सा, बेटियों का हिस्सा, कमज़ोर वारिस का हिस्सा। बेटा, विरासत के

झगड़े तक़रीबन हर दूसरे गुनाह से ज़्यादा ख़ानदान तबाह करते हैं, और अल्लाह ने यहाँ ख़ास तौर पर इसका नाम लिया।

'व तुहिब्बूनल्-माल हुब्बन जम्मा — और तुम माल से हद से ज़्यादा मोहब्बत करते हो।' 'जम्मा' — ढेर लगी हुई, हद से बढ़ी हुई।

बेटा, अब देखिए अल्लाह ने इन चार आयतों में क्या किया। एक आदमी पूछ रहा था कि 'अल्लाह मुझे इज़्ज़त दे रहे हैं या ज़िल्लत?' — और अल्लाह जवाब में यह जाँचते हैं कि वो ख़ुद यतीम, मिस्कीन, वारिसों और अपने पैसे के साथ कैसा सुलूक करता है। यही असल नतीजा है, बैंक स्टेटमेंट नहीं। अल्लाह के हाँ अपना मक़ाम जानना चाहते हैं? देखिए कि आप उनके साथ कैसा सुलूक करते हैं जिनसे आपको कोई फ़ायदा नहीं।

ऐ इत्मिनान वाले नफ़्स

'कल्ला इज़ा दुक्कतिल्-अर्ज़ु दक्कन दक्का — हरगिज़ नहीं! जब ज़मीन को कूट दिया जाएगा, रेज़ा रेज़ा, तह-ब-तह — व जा-अ रब्बुक वल्-मलकु सफ़्फ़न सफ़्फ़ा — और आपका रब तशरीफ़ लाएँगे, और फ़रिश्ते, सफ़ दर सफ़ — व जी-अ यौम-इज़िम्-बि-जहन्नम — और उस दिन जहन्नम को लाया जाएगा।'

बेटा, हदीस में बयान हुआ है कि जहन्नम को सत्तर हज़ार रस्सियों से खींचा जाएगा, और हर रस्सी को सत्तर हज़ार फ़रिश्ते थामे होंगे। और उस दिन: 'यौम-इज़िंय्-यतज़क्करुल्-इंसानु व अन्ना लहुज़्-ज़िक्रा — उस दिन इंसान को याद आएगा — मगर अब उस याद से उसे क्या फ़ायदा?'

'यक़ूलु या लैतनी क़द्दम्तु लि-हयाती — वो कहेगा: काश मैंने अपनी ज़िंदगी के लिए कुछ आगे भेजा होता!'

बेटा, इस जुमले पर थोड़ा बैठिए, क्योंकि यह इस सूरह का सबसे इंसानी जुमला है। ग़ौर कीजिए वो कहता है 'मेरी ज़िंदगी के लिए' — गोया उसे अभी पता चल रहा हो कि असल ज़िंदगी कौन सी थी। जिसे वो पहले 'मेरी ज़िंदगी' कहता था — करियर, घर,

साल — वो सब तैयारी निकली, और जिसे वो नज़रअंदाज़ करता रहा वही असल ज़िंदगी थी।

और फिर, बेटा — कूटी हुई ज़मीन, फ़रिश्तों की सफ़ों और जहन्नम के खींचे जाने के बाद — सूरह पूरे क़ुरआन की सबसे नरम आयतों में से चार पर ख़त्म होती है। लहजा बिल्कुल नरम हो जाता है, और अल्लाह एक नफ़्स से सीधी बात करते हैं:

'या अय्यतुहन्-नफ़्सुल्-मुत्मइन्नह — ऐ इत्मिनान वाले नफ़्स, सुकून पाए हुए — इर्जिई इला रब्बिकि राज़ियतम्-मर्ज़िय्यह — अपने रब की तरफ़ लौट आ, राज़ी और पसंदीदा होकर — फ़द्ख़ुली फ़ी 'इबादी — पस मेरे बंदों में दाख़िल हो जा — वद्ख़ुली जन्नती — और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।'

बेटा, इन्हें आहिस्ता आहिस्ता खोल कर देखिए। 'अन-नफ़्सुल-मुत्मइन्नह' — वो नफ़्स जिसे सुकून मिल गया। याद कीजिए क़ुरआन ने और कौन से नफ़्स गिनवाए: नफ़्स-ए-अम्मारह, जो बुराई का हुक्म देता है; नफ़्स-ए-लव्वामह, जो ख़ुद को मलामत करता है। और यह तीसरा है, वो जो थम गया — जिसने अल्लाह से सौदा-बाज़ी छोड़ दी, झगड़ना छोड़ दिया, और उन्हीं में क़रार पा लिया।

'इर्जिई इला रब्बिकि' — अपने रब की तरफ़ लौट आ। बेटा, 'लौटना' का मतलब है कि तू उन्हीं से आया था। यह दुनिया एक ज़ियारत थी; नफ़्स को घर बुलाया जा रहा है।

'राज़ियतम्-मर्ज़िय्यह' — राज़ी और पसंदीदा। बेटा, यह तबादला देखिए: वो उनसे राज़ी है — हर उस चीज़ पर जो उन्होंने उसके लिए मुक़द्दर की, देने पर और रोकने पर, सेहत पर और बीमारी पर, उन नुक़सानात पर जो वो कभी समझ ही न सका। और वो उससे राज़ी हैं। जो इस दुनिया में अल्लाह से राज़ी रहे, बेटा, उसे अगली दुनिया में उनकी रज़ा मिलती है।

'फ़द्ख़ुली फ़ी 'इबादी' — मेरे बंदों में दाख़िल हो जा। ग़ौर कीजिए: सोहबत में दाख़िल होने की दावत जगह में दाख़िल होने की दावत से पहले आई। पहले: नेकों की सफ़ों में शामिल हो जा। फिर: 'वद्ख़ुली जन्नती' — और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा। 'एक जन्नत' नहीं — मेरी जन्नत।

तो इस सूरह का सफ़र देखिए: इसकी इब्तिदा सुबह से हुई — 'वल-फ़ज्र' — और इसका इख़्तिताम एक नफ़्स के जन्नत में दाख़िल होने पर। एक सुबह की पहली किरन से हमेशगी की सुबह तक।

इस सूरह से क्या सीखा

1. असल अक़्लमंदी 'हिज्र' है — ज़ब्त; वो चालाक शख़्स जो ख़ुद को रोक न सके, क़ुरआन उसे दाना नहीं कहता।

2. सुतूनों, तराशे पहाड़ों और एहराम वाली तहज़ीबें सब गिरीं — तकनीकी अज़मत ने कभी उस क़ौम को नहीं बचाया जिसका अख़लाक़ गिर गया।

3. दौलत और तंगी दोनों इम्तिहान हैं — आराम को अल्लाह की रज़ामंदी और मुश्किल को उनकी ज़िल्लत कभी मत समझिए।

4. आपका असल मक़ाम इससे ज़ाहिर होता है कि आप उनके साथ कैसा सुलूक करते हैं जिनसे आपको कोई फ़ायदा नहीं।

5. यतीम को सिर्फ़ खिलाइए मत, उसकी इज़्ज़त कीजिए — अल्लाह ने यही माँगा है।

6. उस दिन से पहले कुछ आगे भेज दीजिए जब आप कहेंगे 'काश मैंने अपनी ज़िंदगी के लिए कुछ भेजा होता।'

7. उन चार लफ़्ज़ों का निशाना रखिए: 'राज़ियतम-मर्ज़िय्यह' — अभी उनसे राज़ी रहिए, तब वो आपसे राज़ी होंगे।

या अल्लाह, हमारे नफ़्स को मुत्मइन्न बना दीजिए, हमें अपनी तक़दीर पर राज़ी रखिए, और हमें अपने बंदों में और अपनी जन्नत में बुला लीजिए। आमीन।